श्रीः

विद्यालङ्कार, आयुर्वेदाचार्य, चिकित्सक-चूडामणि, वैद्यरत्न,
कवीन्द्र, पण्डित श्रीचन्द्रशेखरधरशर्म्मा मिश्र
अद्वितीय आविष्कारक
आयुर्वेदीय श्रीचन्द्रोदय औषधालय
रत्नमाला, बगहा, चम्पारन का

गूलरसार वा उदुम्बरसार

का

व्यवहार-विधि

तथा

कुछ और औषधों के
नाम दाम

बाबू रामप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित
खड्गविलास, प्रेस, बाँकीपुर
१९२७

(उपोद्घात)

भली भांति ध्यान से पढ़िये ।

गूलर के वन पत्तों से जो अबतक केवल बकरियों के खाने भर के काम में आते हैं यह अतिश्रम, और पूर्ण बुद्धिमत्ता से, बहुत व्यय से, 'उदुम्बरसार' निकाला गया है ।

अगर एकही बार इसका इस्तेमाल आप कर लेंगे तो फिर इसकी प्रशंसा आपही करने लगेंगे परन्तु जब तक आप जांच नहीं करलेते हैं तब तक आप के विश्वास के लिये लिखना पड़ता है, कि जिला चम्पारन के सिविलसर्जन टी० सी० गुहा महोदय, तथा कलकत्ते के "महामहोपाध्याय, कविराज गणनाथसेन सरस्वती, एम० ए०, एल्० एम्० एस," तथा श्री यामिनीभूषण राय, एम्० ए० एम्० बी० एवम् डाक्टर ए० सी० विशारद, एडिटर इण्डियन मेडिकल रिकर्ड, आदि भूमंडल के अद्वितीय विद्वान् एवं शतशः चिकित्सकगण कहते और लिखते हैं कि "यह अपना गुण सब से अधिक प्रकाशित करता है और इसकी दी हुई आरोग्यता चिरस्थायिनी होती है बीमारी की कठिन अवस्था में इस्तेमाल किया और कहीं फेल नहीं किया"

आगे लिखे रोगों में ऊपर लिखे महाशय गणने भी जांच किया है और हमलोगों का भी अनुभव है ।

महामान्य महर्षि पण्डित मदनमोहन मालवीय जी, जस्टिस गोकुल प्रसाद जज हाईकोर्ट इलाहाबाद, महाराजा दर्भंगा आदि तथा 'देश' 'शिक्षा' 'निर्भीक' 'सूर्योदय' 'कलकत्ता समाचार' भारत मित्र आदि समाचार-पत्रों की उत्तम चिकित्सा की सम्मति एवं विचार जानने के लिये

बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखें

इस विषय में यह गज़ल ठीक है कि—

इस दवा को पास में रखते नहीं जो आप हैं।
आत्मघाती आप हैं करते भयङ्कर पाप हैं॥

और भी

आजतक इस जगत् में, ऐसी दवा निकली नहीं।
देख पड़ता है न गुण, दशमांश इसका भी कहीं॥
फेल है कोकन जहां, बेकार कार्बोलिक जहां।
प्राण रोगी का बचाता, है, जबर्दस्ती वहां॥
आइडो फारम भी, हो जाता जहां फिर फेल है।
इस मुसीबत में दिखाता, यह खुदाई खेल है॥
एक हफ्ते में दवा से, घाव भरते हैं जहां।
एकही दिन में दिखाता, काम जादू का वहां॥
छूत से जो रोग हैं, चमड़े के जितने रोग हैं।
घाव जितने हैं दरद, जितने कठिन दुखभोग हैं॥
पेड़ से गिरने के, दुख
कटने के भीषणरूप कष्ट।

जांचिये जो इस दवासे,
कष्ट ही होते हैं नष्ट॥
लेप करते ही तुरत, गायब दरद औ दाह है।
इसलिये इस सारपर सबकी अमृत सी चाह है॥
एक पलमे दाह बेचैनी, विकलता दूर कर।
नींद लाईता है सुखकी तुर्तही आनन्द भर॥
छटपटाते आंखके उड़ने से जब हैरान है।
दर्द है लाली है बेचैनी है जाता प्रान है॥
और नेत्रों की व्यथा में भी हंसाता है यही।
जो निकलते प्राण हैं बरबस बचाता है यही॥
आगके जलने से रोगी, जो तड़पकर रोरहा।
इस दवासे तुर्तही, आराम हो वह सोरहा॥
पेड़ से जो गिर हुआ, बेहोश सबको सोचहै।
कट गया है खून जारी है, घिसा है, मोच है॥
इस कड़ी आफतमे, रोगी को बचाता है यही।
जो तड़प कर रोरहा, उसको हंसाता है यही॥
आगसे जलने का, कटने का ठिकाना है नहीं।
कौन आफत कब कहांसे, चलो आवेगी कहीं॥
इससे हमको एक डिब्बी, पास रखना चाहिये।
घोर सङ्कट के समय में, प्राणबचना चाहिये॥
जोकि अपनेहित के करते, कामसब अनुकूल है।
पास सार नही रहा, तो, सब भयङ्कर भूल है॥

जिन रोगों में इसकी उपकारिता है उसकी कठिन अवस्था में जब कि वैद्यक और डाक्टरी आदि की सभी दवायें फेल हो गई हैं

रोगी की मरने की घड़ी गिनी जाती हो ऐसी ऐसी कठिन आफ्तों में

यही प्राण बचाने की दवा है

बिच्छू के डंक मारने में भी कई जगह उपकारी पाया गया है। हाथी, घोड़े आदि पशुओं की आंखों और घावों को भी आराम करता है।

बहुत से घाव ऐसे होते हैं जिन में दोषों की अधिकता से दवा लगाने से सूजन हो जाती है इस हालत में घबड़ा कर औषध का व्यवहार नहीं छोड़ना चाहिये क्रमशः घाव को पकाकर या योंही अच्छा कर देता है।

खाने से सब प्रकार के प्रमेह (धातु गिरना) जलमेह (डाईवेटिस, सूजाक, रक्तपित्त, अतीसार आदि छूटते हैं।

व्यवहार-विधि (इस्तेमाल का तरीका)

निम्नलिखित बातों पर पूरा ध्यान दीजिये।

(क) जबतक पूरा आराम न हो यह दवा सदा लगी रहनी चाहिये।

(ख) दवा सूखने न पावे सदा गीली रहै।

(ग) कील कांटे आदि गड़ गये हों तो उन्हें निकाल कर दवा लगावै।

(घ) घाव आदि में पीब वगैरह हो तो उसे साफ कर तब दवा लगावै पर पीड़ा शान्ति के लिये, लाभ होता रहै तो पहले भी लगावे

कुचल जाने पर, छिल जाने पर, कट जाने पर, खूनवहने पर, चोट लगने पर, पेड़ आदि पर से गिर पड़ने पर

थोड़े जल में घोल कर दवा लगाना और कटने आदि की कमी या अधिकता के अनुसार पानी में उदुम्बरसार, को घोल कर रुई या कपड़े को उसमें भिगोकर ऊपर से पट्टी रख देना। उस पर गूलर या रेंड या मदार आदि किसी के हरे हरे पत्ते को देकर कपड़े से बांध देना (हरे पत्तों को पट्टी पर देने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि प्रायः छः घंटे तक दवा नहीं सूखती) दवा सूख जाने पर फिर 'गूलरसार' को जल में घोल कर भिगो देना चाहिये।

फोड़े, फुन्सी, अधेंडी, जहरबाद, आदि के उभड़ने में

ऊपर की रीति से पट्टी बांध देनी चाहिये फोड़े आदि बैठ जांयगे। यदि फोड़े आदि भयङ्कर दोष से उठते होंगे तो वे बैठेंगे तो नहीं पर उनका बल कम हो जायगा। जलन शोथ, (फूलना) और दर्द शान्त हो जायगा। और एक जगह मुँह करके पीब बहने के चिन्ह देख पड़ेंगे। पक जाने पर फोड़े के मुंह पर पट्टी कटी रहे। पानी से तर हलकी दवा फोड़े के मुंह पर भी रहे। और प्रतिदिन घाव को साफ धोकर नई दवा ऊपर की रीति से चढ़ानी चाहिये। पीब को दबा कर निकाल देना चाहिये।

बिगड़े घाव में, कीडे पड़ने में सेन में, भगन्दर में, चकाव में, गोल वा कोरदार घाव में किनारे२ कहीं २ बीच में लघु मक्खियों के छाते समान छेद वाले, नासूर घाव में।

एक ही बार तूतिया को पानी में घोल कर उसी से घाव को धो डालो यदि पिचकारी से दवा पहुंचाने योग्य हो तो पिचकारी से ही तूतिया के पानी से धो डाले। कीडों को जहां तक निकाल सको निकाल दो। मोचना

आदि से भी पकड़ २ कर। बाद पहिले कही हुई रीति से दवा लगा कर पट्टी बांधदे। यदि घैनकी जड़ (नाड़ी) टेढ़ी मेढ़ी दूरतक गई हो, तो पिचकारी से वहां तक दवा पहुंचावे और सूत में दवा लपेट कर नर्म २ सींक या चांदी की चिकनी सलाई से जहांतक हो सके भीतर दवा पहुंचावे। और प्रति दिन वा दूसरे दिन दो मटर बराबर दवा तथा सोहागा (चार मटर बराबर १० भर जल में मिला कर धोयें फिर ऊपर का रीति से दवा लगावे और पट्टी बांधदें। प्रति दिन तूतिया के पानी से धोने की जरूरत नहीं है।

'कान के घाव' को भी ऊपर की रीति से बने जल से धीरे २ पिचकारी से या और किसी बर्तन से धीरे २ धार गिरा कर धोना। पीछे पांच बुन्द पानी में घुली हुई दवा कान में छोड़ देना पीछे थोड़ी रूई में दवा भिगो कर कान में रख देना ऊपर से भी कान में सूखी रूई का फाहा रखदेना।

कान के दर्द में — ऊपर की रीति से कान में दवा छोड़ना रूई को उष्ण जल में उबाल कर सुखाकर धुन कर दवा के बोतल में धर कर उसका मुंह कार्क (डाट) से कस कर बन्द कर देना, इसी रूई से सब काम लेना।

आंख उठी हो आंखों में चोट लगी हो, घाव हुआ हो या कील कांटे धसे हों, लाली, दर्द सूजन, बेचैनी आदि में — बीमार को चित्त (उत्तान) सोलाकर आंखों में कानों या नाकों के किनारे वाले कोनों में छः २ बुन्द छोड़ना फिर कपड़े में दवा भिगो कर

उस की पट्टी ऊपर से रखदे। दवा को चौगुने पानी में घोल कर तब आंखों में छोड़ना इस का अंजन लगाना व्यर्थ है।

नांक का घाव चैली गिरना, खून वहना, सड़जाना आदि — ऊपर कहे हुए प्रकार से धोकर कपड़े की बत्ती में दवा लगा कर नाकों के भीतर देना घाव भारी हो और इत्ती से सांस रुकने की सम्भावना हो तो एक नाक में बत्ती देना और एक में थोड़ी दवा लगा देना।

तालू कट गया हो, घांटी वढ़ी हो कंठ में घाव हुआ हो, फूला हो, सांस रुकती हो थक घोंटने में कष्ट होता हो आदि — कपड़े की बड़ी पोटरी के अन्दर दवा रख जहां घाव हो उसी में सटा कर पोटली को रक्खे कि जिससे घाव में दवा लगती जाय। दवा यदि पेट के भीतर भी जायगी तो लाभ ही है। छोटी पोटली गले के भीतर घुस जायगी तो इस से हानि होगी इस लिये पोटली बड़ीही बनानी।

जीभ के भयंकर घाव, सड़ने करने, निनाव मुखपाक आदि में— घाव को एक वार तूतियां के पानी से धोकर पीछे कपड़े की पोटली में दवा रख कर जीभ के घाव में सटा कर रखना रसभी चूसना और तालू आदि में जहां घाव हो, तहां सटाना।

दांत के दर्द मसूड़े में घाव; सड़जाना जो दांत की जड़ का असाध्य रोग पैरिया है जिसे डाक्टर लोग असाध्य कहते हैं और — पहले दांत साफ कर इसमें दवा से दांत की जड़ को भली भांति मल कर कपड़े के भीतर दवा रख कर उसको बतीसा बना कर दांतों की जड़ पर

उसका मवाद थूक के साथ पेट में जाकर मनुष्यों के रंग २ के प्राण घाती रोग पैदा करते हैं— यों रखना कि जिसमें उसका रस घावों पर लगता रहे।

आग से जल जाना जलन बेहोसी झलके व्रण आदि जलन जाती रहती है झलके नहीं पड़ते हैं प्राण बच जाता है — तुरत दवा जल में घोल कर लगाना और जल से तर रखना, लगाते लगाते झलके बाद में घाव कीसी दवा करना।

रक्त विकार, वातविकार आदि के कारण जंघा हाथ पैर आदि में दर्द जिसमें तेल के मालिससे दर्द नहीं छूटते बल्कि बढ़ते हैं— यहां भी दवा को पानी में घोल कर गर्म २ कर दर्द की जगह मालिश करना बाद कपड़े में भिगो कर उसकी पट्टी बांध देना ऊपर से मदार या रेंड के पत्ते सेंक २ कर लपेट कर कपड़े की पट्टी बांध देना सूखने न पावै, यह कभी न भूलें।

बेवाय पैर के तलवा आदि में फूट जाना दरार आना आदि — थोड़े पानी से ढीला कर दवा दरार में भर कर पट्टी बांध देना दवा सूख ने न पावे बराबर तर रखना।

सूजाक स्ट्रिक्चर (पूयमेह) श्वेत प्रदर में — पानी में घोल कर पिचकारी लेना प्रदर में पोटली भी देना।

लड़का होने के कारण जो रास्ता फट जाता है कट जाता है और उसके कारण ज्वर आदि उपद्रव होता है गर्भाशय जो नीचे उतर आता है — इसमें इस दवा की पिचकारी देना और लगाना भी—पोटली में भी दवा रख कर उस स्थान पर रख देना।

बिच्छू के डंक मारने में भी जहां डंक मारा हो वहीं दवा को नियम आनुसार लेप करना और पट्टी बांधना।

खानेमें

पेचिश, मन्दाग्नि, प्रातः और शाम ५ रत्ती से ।) भर तक दवा ३ रुपये भर जलमे मिला कर पीना भारी, दुर्जर, गर्म तथा चिकनी चीजैं नहीं खानी जसे उर्द, दाल, तेल, घी, आदि दिनसे मट्ठा अवश्य खाना। और गूलर के बीज निकाल उस की तर्कारी, कढ़ी आदि खाना। कड़ी पेचिश मन्दाग्नि आदिमे केवल उक्त रीति से गूलर दूध मट्ठा आदि ही खाना।

सुजाक प्रदरमे ऊपर की रीति से दवा खाना, हो सके तो कबाब चीनी का चूर्ण भी दो चुटकी मिला लेना, होसके तो दश गुने पानीमें घोल कर इसी सार की पिचकारी भी लेना श्वेत प्रदरमें दवा की पोटली भी देना

बहुमूत्र या जलमेह =) से ।) भर तक दवा मट्ठेमे मिला कर सवेरे शाम, दोपहर पीना मट्ठा न मिले तो जलही मे घोल कर पीना। बिमारी यह कठिन है, न आराम हो तो मुझ से लिखा पढ़ी करना। इसमे भी तर्कारी गूलर की अवश्य खाना।

अतीसारमे पेचिश और जल प्रमेह की भांति दवा सेवन करना

उदर शूलमे १० रत्ती से २० रत्ती तक दवा और उसके बराबर हर्रे का चूर्ण सहित खाकर जल पीना घी दाल आदि न खाना।

रक्त पित्त मुहसे खून आना औंटेहुए बकरी के दूधमे ।) भर दवा तपेदिक यक्ष्मा आदि ३ बार खाना, पथ्य से रहना। यह बीमारी बहुत कठिन है, लाभ न हो तो हम से पत्र व्यवहार कर दवा सेवन

करना उपयुक्त रोगोंमे खास कर ग्रहणी, मन्दाग्नि, अतिसार, मे पथ्यमे भी गूलर के नर्म २ कच्चे फल के बीज निकाल कर तरकारी लपसी आदि खाने से असाध्य रोगी भी अधिकांश अवश्यमेव अच्छे होते हैं।

अन्य दवायें

महामकरध्वज रस   सब रोगों को आराम कर बहुत दिन दूनी आयु तक जिलानेवाली दवा। जो ज्वर, कमजोरी, दमा, नपुंसकता, आदि रोग संसार के किसी दवा से नहीं छूटते, इसी से बात की बातमे आराम हो जाते हैं। दवा यह असल नही मिलती है। बाजारमे नकली और कम कीमती चल पड़ी है, पर हम दुर्लभ वस्तु देते हैं। दाम ८०) रु० ४०) रु० २५) रु० १०) रु० भरी है। हफ्तेमे १) रुपये दो रुपये ७) रुपये चौदह रुपये पड़ते हैं

(अनन्तामृत)
सुवर्णसालसा   मीठा स्वादिष्ट शर्बत है। यह शरीर की पक्की मरम्मत कर देती है। देहमे बल बढ़ाती है, फुर्ती लाती है, रंगत गुलाब के फूल के समान खिला देती है। नपुंसकता, धातु की कमजोरी, बदन का दुबलापन, प्रदर, बन्ध्यापन, और सब प्रकार के फोड़े, फुन्सी, सूजाक, चरक, कोढ़ तक को आराम कर १ महीने मे ६ सेर, बदन का वजन बढ़ा देती है। दाम अधिक सोनेवाले का १६ खुराक का ६) कम सोनेवाले का १६ खुराक का ३)

महाचन्द्रप्रभा वटी   यह पतले धातु को गाढ़ा कर बहते को रोक कर, बिगड़े को शुद्ध कर, उत्तम सन्तान उत्पन्न होने योग्य बना देती है। सब प्रकार के प्रमेह, धातु जाना, (डाइबेटिस) जल-प्रमेह

की यह एक ही दवा है। पचासों वार पेशाव का होना एक ही खुराकमे आराम होता है। ७ वटी का दाम २) नम्बर २ का १)

मकरध्वज वटी सब प्रकार के जर की सब से अच्छी दवा, ताकत देनेवाली दाम १२ वटी का २)

मकरध्वजादिचूर्ण मकरध्वज वटी के गुणसे बढ़ाहुआ गर्भिणी को देने योग्य भी दाम ३)

अमृतरस जर, बरवट, लीवर, कमजोरी, खासकर सब प्रकार के जर की अद्वितीय (लासानी) दवा नोटकी भांति इसका बिश्वास के साथ व्यापार, और, व्यवहार होता है दाम १) ।।।) ।।=)। ।=) शीशी

मीठा अमृतरस जर, बरवट, लीवर, कमजोरी, आदि की अद्वितीय दवा दाम १२ खुराक का ४) शीशी, ६ खुराक का २) शीशी.

अम्लरस ऊपर के गुणका तथा किफायती दाम ।।) ।=)। शीशी पेचिश, बदहज्मी, शूल का यह महौषध बहुतही अच्छा है, यह इकतेजर को भी छुड़ाता है, त्रिफला गुडूची के काढ़े में मिलाकर पीनेसे प्रसूति, प्लीह, यकृत, ज्वर भी छूटता है।

शीतल तेल शिर ठंढा करता, थके दिमाग को ताज़ा करता याद की शक्ति को बढ़ाता, विद्यार्थियों और माष्टरों विचारकों के बड़े काम का आगसे जलने की शिर दर्द की अद्वितीय दवा। खानेसे रक्त पित्त, प्रदर, सूजाक, भी छूटते हैं दाम ।) ॥) १) शीशी

नव लवणभास्कर स्वादिष्ट चटनी की चटनी, हैजा रोकने की शक्ति भी है, बरबट, मन्दाग्नि, की लासानी दवा अमीर और विद्वान लोग इसे बहुतही पसन्द करते हैं। दाम ।-) ।।=) ।।।) शीशी।

च्यवनप्राश खांसी, यक्ष्मा, और बलको अद्वितीय (लाशानी) दवा दाम २६) सेर

कासनाशिनी वटी कास, निमोनिया मे, दाम ।=) फी पुड़िया।

शृंगाराभ्र वटी बलकारक, ज्वर, कास आदि में, जर भी उतरता है दाम १) सप्ताह (७ दिन का)

एलादिगुटी खांसी, मुंह से खून आने आदि में दाम ॥)

अकोलसार सबल कारी यक्ष्मादि मे परमोपकारी दाम १) भरी

अर्ककपूर—हैजा, पेट, कान, दांत के दर्द में दाम ।) ॥) शीशी

सुधाधारा—अर्ककपूर से दूना गुणकारी दाम ॥) १)

कपूर वटी—अतीसार, हैजा, में दाम ४० वटी का १), २० वटीका ॥)

मकरध्वजांकुश—सब प्रकारके ज्वरकी सस्ती दवा दाम ।) ॥) १)

महामृत्युंजयरस—चढ़े ज्वर के उतारने में दाम ।) ॥) शीशी

ज्वरघ्नीवटी—दस्त साफ लाती, ज्वर उतारती, ।) ॥) शीशी

लालभस्म—सब प्रकार के ज्वर, में दाम २) भरी

महालावी चूर्ण—अतीसार, हैजा, पेचिश मन्दाग्नि में दाम ॥) १) शीशी

सब रोगों की सब प्रकार की दवायें तेल, रस, भस्म, चूर्ण, वटी, अवलेह, आदि मंगालेवें अधिक माल मंगानेवाले अपने करीब के रेलवेस्टेसन का पता लिखें।

एकबार १५) की दवा मगानेवाले एजेन्ट समझे जायगे कमीशन २५) सकड़ा दिया जाता है विशेष जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

मिलने का प्रधान पता।

मैनेजर—आयुर्वेदीय श्रीचन्द्रोदय औषधालय

रत्नमाला—पो० बगहा—जि० चम्पारन।

दूसरा पता

बी० डी० शर्मा, लोलार्क, बनारस सिटी